राष्ट्रीय जागरण और निराला का साहित्य

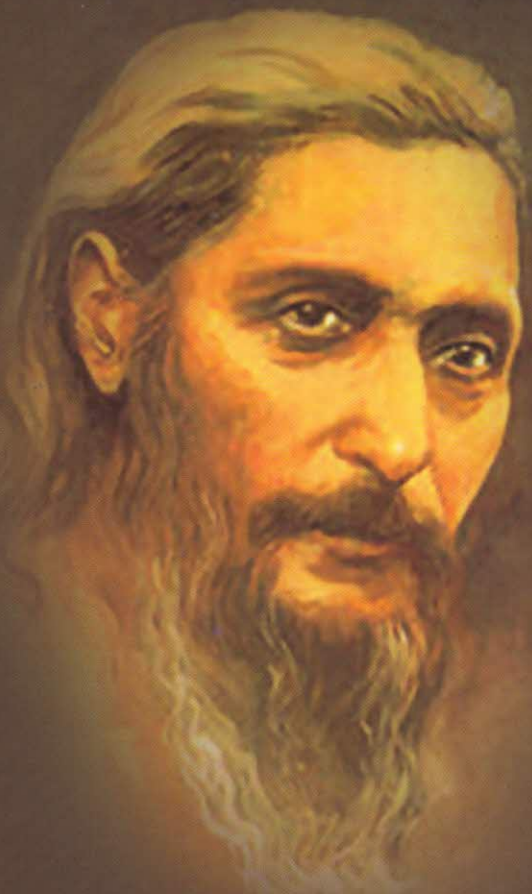

डॉ. दण्डिभोट्ला नागेश्वर राव

डॉ. दण्डिभोट्ला नागेश्वर राव

जन्म : 23 मई, 1979

शिक्षा : एम.ए. - हिन्दी (उस्मानिया विश्वविद्यालय), एम.फिल. और पीएच.डी. (हैदराबाद विश्वविद्यालय) हिन्दी अनुवाद अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (हैदराबाद विश्वविद्यालय)

साहित्यिक एवं शैक्षणिक गतिविधियाँ :

प्रकाशन : 'प्रभु श्री वेंकटेश्वर की दिव्यकथा' (तिरुपति के श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय के द्वारा प्रकाशित)
'तेलुगू साहित्य का इतिहास' (तेलुगू से हिन्दी में अनुवाद) हैदराबाद विश्वविद्यालय के तेलुगू विभाग के द्वारा ई-बुक के रूप में प्रकाशित
पत्र-पत्रिकाओं में हिन्दी एवं तेलुगू में साहित्य संबंधी अनेक आलेख प्रकाशित, राष्ट्रीय जागरण और निराला का साहित्य

पत्र-पत्रिकाओं में : हिन्दी एवं तेलुगू में कई अनूदित रचनाएँ प्रकाशित, आकाशवाणी से समय-समय पर परिचर्चाएँ प्रसारित, छात्रों के लिए रेडियो हिन्दी-पाठ प्रसारित।

पुरस्कार : हिन्दी स्नातकोत्तर शिक्षा में स्वर्णपदक एवं एम.फिल. में स्वर्णपदक प्राप्त

सम्पर्क सूत्र :
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,
श्री चंद्रशेखरेन्द्र सरस्वती (मानित) विश्वविद्यालय
एनातूरू - 631561 कांचीपुरम, तमिलनाडु
फोन : (मो.) 9655035217, 7708752949
ईमेल : nagukanchi09@gmail.com

राष्ट्रीय जागरण और निराला का साहित्य

लेखक
डॉ. दण्डिभोट्ला नागेश्वर राव

मिलिन्द प्रकाशन
हैदराबाद

राष्ट्रीय जागरण और निराला का साहित्य

लेखक: **डॉ. दण्डिभोट्ला नागेश्वर राव**

प्रकाशक
मिलिन्द प्रकाशन
4-3-178/2, कन्दास्वामी बाग
हनुमान व्यायाम शाला की गली
सुल्तान बाज़ार
हैदराबाद - 500 095
(24753737)

आवरण सज्जा
वी'डिजाइन, हैदराबाद
मो. : +91 98855 06088

प्रथम संस्करण
2017

मूल्य
₹ 400/-
रुपये चार सौ

ISBN : 81-7868-070-8

RASHTRIYA JAGRAN AUR NIRALA KA SAHITYA
BY **DR. DANDIBOTLA NAGESHWAR RAO**

काट अन्ध, उर के बन्धन-स्तर..
बहा जननि.. ज्योतिर्मय निर्झर...

जननी कामाक्षी के दिव्य चरणों को समर्पित

आचार्य. आर. एस. सर्राजु,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
हैदराबाद विश्वविद्यालय

Prof. R. S. SARRAJU
Head, Department of Hindi,
University of Hyderabad

भारतीय राष्ट्रीय जागरण का लक्ष्य भारतवासियों की सामाजिक-सांस्कृतिक दासता को दूर करना था। निराला अपने साहित्य में राजनैतिक मुक्ति के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक मुक्ति की प्रबल आकांक्षा व्यक्त करते हैं। साम्राज्यवाद और सामंतवाद के समझौते के दौर में निराला के साहित्य में भारतीय समाज की मुक्ति की प्रतिध्वनि सुनाई देती है। निराला के साहित्यिक कथ्यों के विकास में राष्ट्रीय जागरण और भारतीय समाज के परिवर्तनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका दिखाई देती है। डॉ. डी. नागेश्वर राव ने अपने इस ग्रंथ में राष्ट्रीय जागरण के परिप्रेक्ष्य में निराला के साहित्य का समग्र विश्लेषण किया है। निराला के साहित्य के अध्येताओं के लिए नागेश्वर राव का यह ग्रंथ दिशा-निर्देशन करता है।

****